डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 7 जनवरी 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

# अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-नौवां | जनवरी -2009 | मासिक पत्रिका

**रूहानियत 5**
गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

**सच्चे साथी 9**
गुरु अर्जुनदेव जी की बानी
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

**पति-पत्नी 26**
एक अनमोल सलाह
सन्तबानी आश्रम, न्यू हैम्पशायर

**प्रेम-विरह 31**
सन्त अजायब सिंह जी द्वारा अनमोल वचन
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

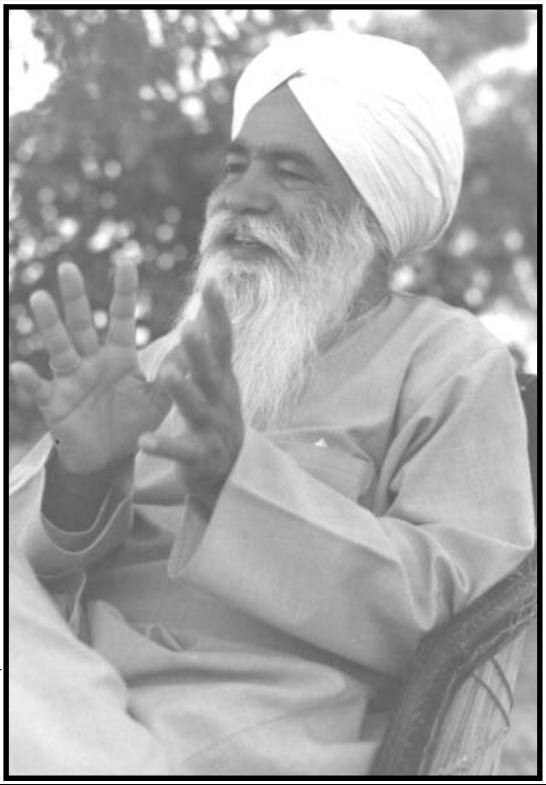

**स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक :** प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 556671
**विशेष सलाहकार :** गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 9928 925304 **उप सम्पादिका :** नंदिनी
**सहयोग :** रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द , ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

**सन्त बानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
(82)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in    Website : www.ajaibbani.org

# जी अज दी सुलखणी घड़ी

जी अज दी सुलखणी घड़ी, मेरे सतगुरु आण मिलाई, (2)

1. मेरे विच गुण कोई ना, मैं तां हाँ पापण हत्यारी,
जंगला च रही ढुंढदी, अपने पिया मिलन दी मारी, (2)
भुली होई जन्मा दी, मैं तां दर तेरे ते आई,
जी अज दी सुलखणी घड़ी.....

2. तैथों बिना सांई मेरया, झल्ले दुनियां ते दुःख मैं बथेरे,
जमदी मरदी रही हर थां, आखिर आण के डिगी दर तेरे, (2)
हुण ना विछोड़ी दातेया, तेरे दर ते निमाणी जिंद आई,
जी अज दी सुलखणी घड़ी.....

3. आसरा ना रहया कोई वी, इको तकया सहारा तेरा,
थक गई मैं भाल भाल के, किवें लभ जाए प्यारा मेरा, (2)
मैं हथ बन करां बेनती, मैंनूं हर थां होणा जी सहाई,
जी अज दी सुलखणी घड़ी.....

4. मिलो कृपाल प्यारेया, लावों लेखे विच जिंदगी मेरी,
माफ करीं भुल्लां मेरियां, मैं आई हाँ शरण हुण तेरी, (2)
अरज 'अजायब' करे, दासी बन तेरी मैं आई,
जी अज दी सुलखणी घड़ी.....

✷✷✷

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

# रूहानियत

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

सन्तमत में कामयाब होने के लिए सतसंगी के दिल में प्यार, भरोसा और श्रद्धा हमेशा बनी रहनी चाहिए। सतसंगी को अपने अंदर सिमरन, भजन और ध्यान कायम रखना चाहिए। पड़ताल करने पर हमें पता लगता है कि हम **रूहानियत** में कितने दिवालिएपन पर आकर खड़े हैं; हम रूहानियत में बिल्कुल कंगाल हैं।

गरीब आदमी किसी अमीर आदमी के आगे इसलिए हाथ फैलाता है क्योंकि वह अपने आपको गरीब समझता है कि यह मुझे कुछ न कुछ देगा, मेरी जरूरत पूरी करेगा। प्यारेयो! हमारी भी यही हालत है। जब हम समझते हैं कि हम **रूहानियत** के दिवालिएपन पर पहुँच चुके हैं तो ही हम उस महान शक्ति के आगे फरियाद करते हैं कि तू हमारी सहायता कर।

इस जगह के बारे में आपने बहुत कुछ सुना और मैगजीन में पढ़ा भी है। यह गुफा दुनियावी तौर पर सुंदर नहीं, जंगल में है। यह जगह उसी तरह है जैसी महाराज कृपाल के वक्त में थी। जब इस गरीब आत्मा को पता लगा कि मैं **रूहानियत** में कंगाल हूं, कमजोर हूं तो यह आत्मा दर-दर फिरी। मैं सतसंगो में बताया करता हूं कि मैं उसकी याद में फिरता रहा लेकिन जब मुझे बाहर से कुछ नहीं मिला फिर अपने आपको असहाय समझकर मैंने उसे पुकारना शुरू किया।

परमपिता कृपाल ने छब्बीस साल बड़े प्यार से कहा, ''इंसान का बनना मुश्किल है भगवान का पाना मुश्किल नहीं, भगवान इंसान की तलाश में फिरता है।'' आप फिर कहते, ''देने वाले का क्या कसूर है सवाल तो लेने वाले का है? जिसने जैसा-जैसा बर्तन बनाया होता है वह वैसा ही दे जाता है। यह हमारी श्रद्धा, प्यार और भरोसे पर निर्भर

करता है।'' आप यह भी कहा करते थे कि परमात्मा सब जानता है। वह पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ सब देख रहा होता है कि कहाँ आग लगी हुई है? उसकी मदद के लिए फौरन आक्सीजन पहुँच जाती है।

इसी तरह वह परमात्मा बेखबर नहीं। जब उसे पता लगा कि यह गरीब आत्मा मदद के लिए मुझे पुकार रही है तो वह भी रह नहीं सका। इस जगह की यही महानता है कि जब मुझे बाहर से कुछ नहीं मिला तो उसने यहां आकर मुझे **रूहानियत** का बेशुमार भंडार दिया जोकि बयान से बाहर है। यह भंडार मूल्य से, जोर-जबरदस्ती या कोई भेष धारण करने से नहीं मिलता।

आपने हमें बड़े प्यार से बताया कि आपका सफर पैरों के तलवों से लेकर सिर की चोटी तक है। आपने सिमरन की सहायता से तीसरे तिल तक पहुँचना है। ऊपर का सफर आत्मा 'शब्द' पर सवार होकर तय करती है। हम जब तक सिमरन की सहायता से तीसरे तिल पर नहीं पहुँचते तब तक 'शब्द' हमारी आत्मा को नहीं खींचता बेशक सुनाई देता है। जिस तरह लोहा चुम्बक की रेंज से दूर हो तो वह लोहे को नहीं खींचता इसी तरह जब तक आत्मा तीसरे तिल पर नहीं पहुंचती 'शब्द' आत्मा को नहीं खींचता और हम ऊपर का सफर तय नहीं कर सकते।

हम सिमरन की महानता को नहीं समझते। शुरू में हमें थोड़ा सघर्ष करना पड़ता है लेकिन जब रस आने लग जाता है फिर पता लगता है कि सिमरन का क्या फायदा है। यही बात भरोसे की है कि शुरू में हमारा मन दखलंदाजी करता है कभी हम गुरु को इंसान समझते हैं! कभी कम पढ़ा लिखा समझते हैं! कभी बुद्धिमान समझते हैं। इस तरह कभी भरोसा बंध जाता है कभी टूट जाता है।

सेवक के अंदर ऐसा संघर्ष चलता रहता है लेकिन जब थोड़ा सघर्ष करते हैं आखिर एक दिन कामयाब हो जाते हैं। भरोसा बंध जाने के बाद फिर सपने में भी नहीं सोचते कि मेरा गुरु इंसान है। इंसान के

जामें में वह महान सतपुरुष छिपा हुआ है, वह 'शब्द-रूप' होकर कण-कण में व्यापक है। जब हम उसे एक बार अंदर देख लेते हैं फिर भरोसा नहीं टूटता।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि वह अपने आप इंसान नहीं बना वह कर्मों की कैद में नहीं होता। प्रभु ने उसे हमारी मदद के लिए भेजा होता है। वह अपने उन शिष्यों के कल्याण के लिए आता है जिनका फैसला सच्चखंड में हो चुका होता है कि अब इन्हें परेशानी की दुनिया में नहीं भेजना। गुरु का प्यार विषय-विकारों से बचने का सबसे उत्तम साधन है क्योंकि दुनिया में गुरु जैसा कोई सुंदर नहीं लगता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***मैं देख देख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा।***

मैंने सतसंग में पहले भी यह छोटी सी कहानी अर्ज की है। यह कहानी मैंने परमपिता कृपाल से सुनी थी। महाराज सावन सिंह जी का बत्तीस साल का जवान बेटा ओवरसियर लगा हुआ था। महाराज सावन सिंह जी ने उसका अंत समय ब्यास स्टेशन पर ही पूरा करवाया। आप करण-कारण थे। आप कहते हैं कि उस समय मैंने अपना दिल टटोलकर देखा जिसमें न कोई खुशी थी न कोई गमी थी। यह बाबा जयमल सिंह जी की ही दया-मेहर थी कि मैं भाणा मान सका।

आप अपने बेटे को इस वजह से डेरे लेकर नहीं गए कि बीबी रुक्को बाबा जयमल सिंह जी से कहेगी कि आप इस लड़के को जीवित रखें। सन्त कुदरत के असूलों के मुताबिक ही चलते हैं। सन्त अपने सेवकों से कहते हैं, ''मुसीबत को सहन कर लें, कोई करामात न दिखाएं। ऐसा करने से गुरुमुखता में फर्क पड़ता है।''

एक बार महाराज सावन सिंह जी अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के गाँव सतसंग करने के लिए गए। जैसे ही गाँव की हद आई आप कार से उतरे और लेटकर उस जगह को दंडवत प्रणाम किया। जब सतसंग करने बैठे तो सतसंग न कर सके, जोर-जोर से रोने लगे।

महाराज कृपाल ने आपसे कहा, ''महाराज जी! जब आपकी यह हालत है तो हम जीव क्या कर सकते हैं?'' महाराज सावन सिंह जी ने थोड़ा सा रूककर कहा, ''अगर आज बाबा जयमल सिंह जी मेरी आँखों के सामने आ जाएं तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

आप सोचकर देखें! जब आपका इतना बड़ा दुनियावी नुकसान हुआ तो आपको उसका कोई दुःख महसूस नहीं हुआ लेकिन गुरु के बिछोड़े ने आपको इतना घायल कर दिया।

प्रभु परमात्मा कृपाल ने कई बार इस जगह पर अपने मुबारक चरण रखें हैं। कई प्रेमी जिनका 'शब्द' बंद होता है अगर वे श्रद्धा से इस गुफा के अंदर जाते हैं तो जब वे मुझसे मिलते हैं तो बताते हैं कि हमारा 'शब्द' चल पड़ा। सिमरन करते हुए इस गुफा के अंदर जाएं और सिमरन करते हुए ही बाहर आएं।

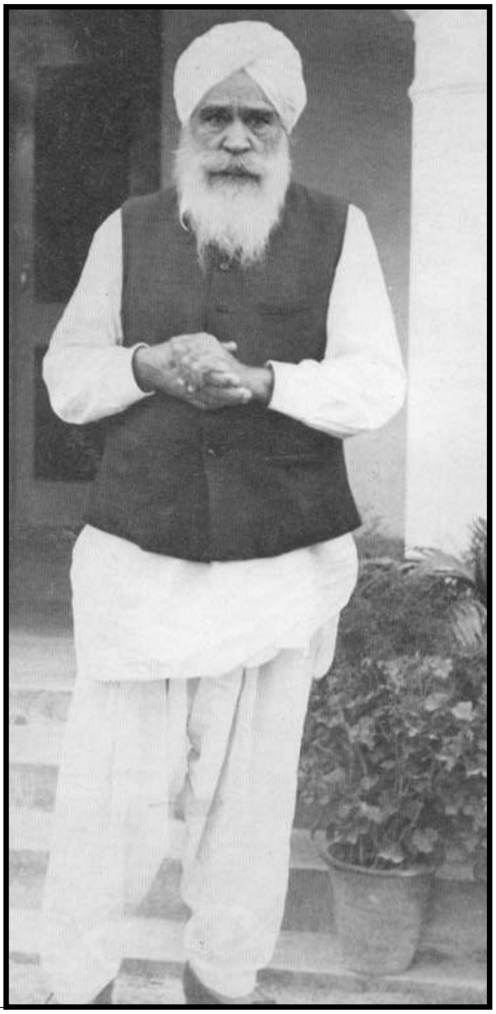

मैं आशा करता हूँ कि आप जिस श्रद्धा और प्यार के साथ दस दिन के लिए यहाँ आए हैं। आपको यहाँ से जो प्रेरणा मिली है आप अपने देश और घरों में जाकर अपनी दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाते हुए भजन-सिमरन करके इस प्रेरणा को बनाए रखेंगे।

✷✷✷

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# सच्चे साथी

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, दया की; इस तपती आत्मा पर 'नाम' के छींटे मारकर शान्ति बख्शी। यह शान्ति हम खेतों में उगा नहीं सकते, कोई मूल्य देकर खरीद नहीं सकते। जब परमात्मा हमारे ऊपर दया करता है तो सबसे पहले हमें इंसान का जामा देता है। पशु-पक्षी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते और देवी-देवताओं को भी यह मौका नहीं दिया गया। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

***लख चौरासी जून उपाई मानस को प्रभ दी वडयाई।***
***इस पौड़ी ते जो नर चूके सो आए जाए दुख पाएंदा।***

परमात्मा ने भक्ति करने के लिए हमें इंसान का जामा दिया है अगर हम इस जामें को शराबों-कबाबों, विषय-विकारों और मैं-मेरी में बर्बाद कर जाते हैं तो पता नहीं फिर परमात्मा हमें यह मौका दे या न दे! मुझे परमात्मा की दया से बहुत से मुल्कों में जाने का मौका मिलता है। काफी जगह और बहुत सी कौमें ऐसी हैं जिन्हें परमात्मा के बारे में पता ही नहीं कि परमात्मा भी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर भूले-भटके हमारा जन्म किसी ऐसी जगह हो जाए तो यह इंसानी जामा बेकार चला जाता है। परमात्मा ने हम पर बड़ी भारी दया करके हमें इंसानी जामा दिया फिर रहम करके हमें किसी सन्त-महात्मा की संगत-सोहबत दी।''

जब हम अपने ऊपर दया करते हैं तो हम अपने जीवन को महात्मा के कहने के मुताबिक ढ़ालते हैं। सन्त-महात्मा ही हमारे **सच्चे साथी** और सच्चे हितैशी हैं। वे हमारे फायदे के लिए ही समझाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

***प्रथाए साखी महा पुरख बोलदे सांझी सगल जहाने।***

सन्त-महात्मा किसी खास समाज, मुल्क या जाति के लिए नहीं आते। वे इस संसार में सब आत्माओं के लिए आते हैं। वे हमें प्यार से समझाते हैं, ''प्यारेयो! परमात्मा हम सबका पिता है, हम सब उसके बच्चे हैं। परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा। हिन्दू, मुसलमान, हरिजन, ब्राह्मण की दीवारें हमने अपने मन के पीछे लगकर खड़ी की हैं, इनका डिजाइनर मन है।''

आप देखें! आसमान में सूरज चमकता है वह सबको एक जैसी गर्मी और प्रकाश देता है। सूरज ने कभी यह नहीं सोचा! यह हरिजन, सिक्ख या मुसलमान है। मैंने इसे धूप या गर्मी देनी है या नहीं देनी? सूरज में से जो किरणें निकलती हैं वे सब एक हैं, वे धरती से टकराकर धूप बन जाती हैं फिर वापिस जाकर सूरज में समा जाती हैं।

इसी तरह हमारी आत्मा, सतपुरुष परमात्मा महासूरज की एक किरण है। यह परमात्मा से बिछुड़कर पहले भँवरगुफा फिर पारब्रह्म में आती है। यह जैसे-जैसे नीचे आती है इसकी रोशनी कम होती जाती है। जब कारण देश में आती है तो कारण पर्दा चढ़ जाता है। बह्म में आती है तो स्थूल पर्दा चढ़ जाता है। आज हम स्थूल दुनिया में बैठें हैं। यहाँ आकर इस पर एक और मोटा पर्दा चढ़ जाता है।

महाराज जी समझाया करते थे अगर किसी लैम्प पर टाट के पर्दे चढ़ा दें उसे जिस कमरे में रखेंगे वहाँ अंधेरा ही होगा। जैसे-जैसे उसके ऊपर से पर्दे उतारते जाएंगे कमरे में रोशनी बढ़ती जाएगी।

इसी तरह हमारी आत्मा महासूरज की एक किरण है; यह भी प्रकाशमान है लेकिन यहाँ स्थूल दुनिया में आकर इसका प्रकाश पर्दों से ढ़क जाता है। इसके ऊपर अज्ञानता छा जाती है, अंधेरा छा जाता है। जब परमात्मा हमारे ऊपर दया करता है तो हमें किसी सन्त-महात्मा की संगत और सोहबत में ले जाता है। गुरु साहब कहते हैं:

*जिन मस्तक धुरों हर लिखया तिन सतगुरु मिलया।*
*अज्ञान अंधेरा कटया ज्ञान घट बलया।*

हम तो कहते हैं कि ईंट उठाओ तो गुरु मिल जाता है लेकिन गुरु के चरणों में जाने से पहले सोचें! क्या इस महात्मा ने दस-बीस साल भजन-सिमरन किया है, कोई कुर्बानी की है? असल की नकल भी होती है। हमने केवल भीड़-भाड़ ही नहीं देखनी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि गायों का झुंड निकल रहा था। एक आदमी ने कहा, ''देखो महात्मा जी! गायों का कितना बड़ा झुंड जा रहा है।'' महात्मा ने कहा, ''प्यारेया! इस झुंड में तेरा क्या है?'' उसने कहा, ''इसमें मेरा अपना तो कुछ नहीं मेरे ताये का बछड़ा है।'' हमारी भी यही हालत है। हम कहते है कि देखो जी! वहाँ बड़े-बड़े मकान है, उनमें सोना-चाँदी लगा हुआ है। वहाँ बहुत भीड़ है।

महाराज जी कहा करते थे, ''कुरुक्षेत्र और हरिद्वार में कुम्भ के समय करोड़ो आदमी इकट्ठे हो जाते हैं क्या वे सारे सन्त हैं?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*कोटन में कोउ जो भजन राम को पावे।*
*जग में उत्तम कडिए विरले केई के।*

सन्तों ने इस दुनिया को अंधा कुआँ कहकर ब्यान किया है। इसमें गिरी हुई आत्मा न अपने आपको देख सकती है, न आसपास देख सकती है और न बाहर ही निकल सकती है। सन्त-महात्मा सच्चे जिज्ञासु के अंदर 'शब्द' की डोरी लटका देते हैं, 'नाम' का दीपक जला देते हैं। उस प्रकाश के जरिए हम उस कुएँ में देख भी सकते हैं और 'शब्द' की डोरी पकड़कर बाहर भी आ सकते हैं। हमें अपने कर्मों के मुताबिक अनुभव भी होता है।

परमात्मा हमारे अंदर ज्योति रूप और नाद रूप होकर बिराजमान है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*अंतरजोत निरंतर बानी।*

प्यारेयो! जब हम स्कूल में जाते हैं वहाँ टीचर और स्टूडेंट की अपनी-अपनी ड्युटी होती है अगर हम स्कूल में जाकर टीचर के कहे मुताबिक न चलें तो टीचर का क्या कसूर है? इसी तरह 'नाम' लेने के बाद 'नाम' की अराधना भी करनी पड़ती है। जो ऐसा करते हैं वे अपनी आँखों से देख लेते हैं। बाकी वहम में हैं; वहम की कोई दवाई नहीं।

*हर लद्दा रत्न पदार्थों फिर बोहड़ न चलया।*
*नानक नाम अराध्या अराध हरि मिलया।*

अगर हमारे ऊँचे भाग्य हों तो हम महात्मा के कहे मुताबिक चलते हैं। महात्मा हमें ऐसी कहानियाँ नहीं सुनाते जिससे हम और उलझ जाएं। हमें जो यह चलती-फिरती दुनिया नजर आ रही है इसे बनाने वाला भी कोई है, यह अपने आप पैदा नहीं हुई। परमात्मा ने खास विधान बनाए हैं जैसे वक्त पर सूरज निकलता और अस्त होता है। चन्द्रमा की कला कैसे घटती-बढ़ती है? दिन-रात किस तरह आते हैं? इन सबकी चाबी घुमाने वाला परमात्मा है। परमात्मा इस दुनिया को बनाकर बेखबर नहीं। परमात्मा ने एक ऐसा देवता भी पैदा किया है जिसे हम मौत का देवता कहते हैं वह समय का बहुत पक्का होता है।

सुख-दुख, अमीरी-गरीबी, बीमारी-तंदरुस्ती और मौत-पैदाईश हमारे पैदा होने से पहले ही दर्ज हो जाती हैं कि मौत कहाँ, किस समय और कैसे आनी है। जब घटना घटती है तो हमें उसका ज्ञान नहीं होता, हम मोह के कारण रोते-चिल्लाते हैं। क्या रोने से कोई वापिस आया है? अगर हम 'नाम' की कमाई करके नौं द्वारे खाली करके 'शब्द' के साथ जुड़ जाएं तो हमें उस घटना के कारण का भी ज्ञान हो जाएगा।

छोटे होते हुए हमारी माता हमें कहानियाँ सुनाया करती थी। समझदार माताएं आज भी दिल बहलाने के लिए बच्चों को कहानियाँ सुनाती हैं। माता कहती कि बेटा जब परमात्मा ने सृष्टि बनाई लेकिन हम उसी समय सवाल कर देते, ''माता! क्या तूने परमात्मा को देखा है?'' वह कहती, ''नहीं! मैं सुनी-सुनाई बात कर रही हूँ कि परमात्मा

ने सृष्टि बनाते हुए सोचा! अगर मैंने इन जीवों को सदा के लिए अमर कर दिया तो पता नहीं ये क्या करेंगे? माता-पिता बच्चों के साथ बहुत मोह करते हैं अगर माता-पिता के जीते जी मैंने किसी के बच्चे को वापिस बुला लिया तो ये बचेंगे ही नहीं।''

परमात्मा ने गधी के एक बच्चे को उठाकर कुएँ में फेंक दिया। गधी कुएँ के आस-पास हीं-हीं करके थोड़ी देर बाद जाकर एक तरफ बैठ गई। परमात्मा ने सोचा कि यह तरीका ठीक है। लोग भी गधी की तरह चार दिन हीं-हीं करके बैठ जाएंगे। हम सच्चाई को नहीं समझते। कोई किसी के पीछे नहीं मरता, यह सब झूठा दिखावे का प्यार है।

सन्त हमें बताते हैं कि यह दुनिया बिलकुल सच नहीं। मौत ही हमें दुरुस्त रखती है। मौत को देखकर ही हमारे भूले मन को चोट लगती है। यह सारी दुनिया कूड़ का पसारा है। राजा, प्रजा, पीर, पैगम्बर कोई भी इस संसार में नहीं रहेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*जो उपजया सो बिनस है परयो आज के काल।*
*नानक हर गुण गाए ले छाड़ सगल जंजाल।*

हम जानते हैं कि जब बच्चे की पैदाईश होती है उस समय बच्चे की क्या हालत होती है? वह कितने गंद में होता है। जब मौत आती है तो हमारे साथ प्यार करने वाले सगे-संबधी हमें उठाकर आग के हवाले कर देते हैं। यह भूला मन सोचता है! मौत तो और लोगों के लिए है मेरे लिए तो शराब-कबाब, ऐशों-इशरतें ही हैं। इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ खोलकर इस संसार से चला जाता है। यह अपने साथ कुछ भी लेकर नहीं जाता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*अकेला आया है अकेला जाएगा दूजा रब है अगर ध्याएंगा।*

हमारे साथ जाने वाली चीज़ के बारे में तो हम सोचते नहीं अगर मालिक की भक्ति करेंगे तो ही वह हमारा साथ देगा। सन्त हमारे **सच्चे साथी** हैं, हमारे फायदे के लिए ही बोलते हैं। परमात्मा इंसान का जामा देता है फिर दया करके हमें किसी महात्मा की शरण में भेजता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सच तो यह है कि सन्त हमारे मुफ्त के नौकर और **सच्चे साथी** हैं। आप देख लें! संसार में हर कोई गरज का प्यार करता है। माता-पिता भी बच्चों को इसलिए पालते हैं क्योंकि उन्हें गरज होती है कि ये बच्चे बड़े होने पर हमारी संभाल करेंगे। औरत-मर्द का भी आपस में गरज का प्यार है।'' कबीर साहब कहते हैंः

***दिल का महरम कोई न मिलया जो मिलया सो गरजी।***

गुरु ही बेगरज प्यार करता है। गुरु हमेशा अपने सेवक से भजन की ही आशा करता है। जब हम अपने ऊपर दया करते हैं तो हम महात्मा के वचनों पर अमल करना शुरु करते हैं, नहीं तो हम भ्रम में आते हैं और भ्रम में ही चले जाते हैं। जो अपने ऊपर दया करेगा वह दूसरों पर भी दया करेगा।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर सतसंग में यह कहानी सुनाया करते थे कि एक महाजन रोज़ सतसंग मे जाया करता था। वह सतसंग में जो सुनता वहीं छोड़ आता। एक दिन उसे कोई खास काम पड़ गया तो उसने अपने लड़के को सतसंग में भेज दिया। सतसंग में महात्मा कह रहे थे, ''सबसे पहले अपने ऊपर दया करनी सीखें। पशु-पक्षी हर एक को धरती पर रहने का एक-सा ही हक होता है।'' वह लड़का इतनी बात पकड़कर घर आ गया।

उसकी दुकान पर एक गाय आकर आटा खाने लगी, लड़का देखता रहा। इतने में महाजन दुकान पर आ गया यह देखकर उसने अपने लड़के से कहा, ''अन्धे! तुझे दिखाई नहीं दे रहा कि गाय आटा खा रही है?'' लड़के ने कहा, ''पिताजी! हमें इतना ब्याज, इतना किराया आता है हमारे पास परमात्मा का दिया बहुत धन-पदार्थ हैं अगर यह गाय थोड़ा सा आटा खा लेगी तो क्या फर्क पड़ जाएगा?'' महाजन ने कहा, ''तू यह बात कहाँ से सुनकर आया है?'' लड़के ने कहा, ''मैं आज सतसंग में गया था वहाँ महात्मा यह प्रचार कर रहे थे कि सब पर दया करें।'' महाजन ने कहा कि मुझे सतसंग में जाते हुए तीस साल हो गए

हैं अगर मैं ऐसी बातें सुनकर अमल करता तो आज तक मैं अपना घर उजाड़ चुका होता। ऐसी बातें सुनकर वहीं छोड़ आते हैं।

हमारी भी यही हालत है कि हम सतसंग में जाते हैं क्योंकि हमारे अंदर परमात्मा का प्यार है लेकिन हम एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं और बनिए की तरह खाली हाथ घर चले आते हैं। हम यह नहीं सोचते की हमने सतसंग में क्या सुना और हमारे अंदर क्या ऐब है? सतसंग में ही हमें हमारी गलतियों का पता लगता है हमारा धर्म बनता है कि हम अपनी गलतियों को सुधारें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो शाम को घर आ जाए उसे भूला न समझें।'' महाराज कृपाल कहते थे, ''नेक बनें नेकी फैलाएं, भला सोचें भला करें।'' दूसरों पर भी रहम करें उन्हें भी समझाएं प्यारेया! मैं सन्तों की संगत में जाकर फायदा उठाता हूँ अगर तेरी समझ में आता है तो तू भी फायदा उठा!

सन्त-महात्मा हमें समझाते हैं कि जब परमात्मा हमारे ऊपर दया करता है तो ही हम महात्मा की संगत में जाकर उस पर अमल करते हैं। महाराज जी कहा करते थे, '' गुरु ग्रन्थ साहब रुहानियत का ख़जाना है लेकिन हम लोगों को इस ख़जाने का ज्ञान नहीं। हमने इसे पढ़ने-पढ़ाने का रीति-रिवाज़ बना लिया है। हमें चाहिए कि इसे सोच-समझकर पढ़े कि हममें क्या कमी है और हम किस तरफ जा रहे है?''

*धृग तिना का जीवया जो लिख लिख वेचे नाओं।*
*खेती जिनकी उजड़ी खिलवाड़े क्या थाओं।*

जो लोग इसे बेच रहे हैं वह नहीं जानते कि गुरु नानकदेव जी की बानी कितनी अमोलक और पवित्र है। कल के सतसंग में गुरु नानकदेव जी ने हमें कलयुग के लक्ष्ण बताए थे। कलयुग किसी महल में नहीं, किसी वेद-शास्त्र में नहीं। यह लोगों के दिलों में बैठकर मन को बिगाड़ता है। गुरु साहब कहते हैं:

*शास्त्र वेद न माने कोए आपो आपी पूजा होए।*

गीता में भी यही उपदेश है कि किसी महात्मा के पास जाएं वह आपकी सुरत को 'शब्द' के साथ जोड़ेगा, आप अंदर जाएं। चारों वेद 'नाम' की महिमा गाते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

***चार पुकारें न तू माने खट भी ऐके बात बकाने।***

सन्तों के बिना 'नाम' नहीं मिलता। 'नाम' न आँखों से देखा जाता है न कानों से सुना जाता है। यह किसी भाषा का लफ्ज़ नहीं, बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। छह शास्त्र अठारह पुराण भी 'नाम' की महिमा गाते हैं। जो कुछ भी धर्म-ग्रन्थों में लिखा है हम उस पर अमल नहीं करते, भ्रमों को पकड़कर बैठ जाते हैं। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनेः

**गुरु की मूरति मन महि धिआनु।। गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान।।**

परमात्मा अलख है, अगम है, अगोचर है। हम उसकी अगमता को समझ नहीं सकते। उसे आँखों से देख नहीं सकते। जिस तरह माता बच्चे को पालती है सबसे पहले माता बच्चे में मोह और लगाव पैदा करती है। माता बच्चे को बताती है कि यह तेरी बहन है, यह तेरा भाई है फिर उसे इशारों से बोलने का तरीका सिखाती है। जब बच्चा एक टूटा-फूटा शब्द भी बोलता है तो माता खुश होकर आने-जाने वाले को बताती है कि आज इसने यह बोला है। पहले माता ही प्यार करती है।

परमात्मा इंसान की कमजोरी जानता है। वह दया का समुद्र है, वह जब भी उछलता है तो किसी न किसी महात्मा को संसार में भेजता है। वह संसार में हमारे जैसा इंसान बनकर आता है, हमारी तरह ही खाता-पीता और चलता-फिरता है लेकिन उसका जीवन अलग होता है। वह इस संसार में छोटा बनकर रहता है इसलिए हम उसे समझ नहीं सकते। उसके अंदर कमाल की नम्रता होती है। सब कुछ होते हुए भी वह गरीब बनकर रहता है, वही हमारा **सच्चा साथी** है। मैंने एक भजन में लिखा हैः ***खैर नाम की पाओ कृपाल जी अजायब रहया बोल।***

'नाम' की खैर को आग जला नहीं सकती। चोर इसे चुरा नहीं सकता। यह खैर खाने से और खर्चने से भी खत्म नहीं होती। गरीब बनकर गुरु के दर पर गिरना पड़ता है।

मुझे बाबा बिशन दास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आप राज-घराने में पैदा हुए थे और काफी पढ़े-लिखे थे। आपने बाबा अमोलक दास जी के पास जाकर एक ही सवाल किया, ''महाराज जी! मुझे नर्क से निकाल दें।'' यह नम्रता और आजजी है।

परमात्मा जब किसी सन्त को इंसान बनाकर हमारे बीच भेजता है तो वह बहुत छोटा बनकर रहता है। जिस तरह किसी के बच्चे को खानाबदोश उठाकर ले जाते हैं। ममता से बंधा हुआ पिता अपने बच्चे की खोज़ में निकलता है। उसे पता लगता है कि बच्चा खानाबदोशों के बीच रह रहा है। पिता उनकी भाषा सीखता है, उन जैसे कपड़े पहनता है। लड़का पिता को नहीं पहचानता। उसकी बात सुनने को तैयार नहीं होता लेकिन नित्य की सोहबत का असर होता है अगर हम अच्छे आदमी की सोहबत करेंगे तो हमारे ऊपर अच्छा रंग चढ़ जाता है, बुरे आदमी की सोहबत करेंगे तो हमारे ऊपर भी वैसा ही असर हो जाता है।

जब बच्चा रोजाना पिता की बातें सुनता रहा तो धीरे-धीरे उसने बच्चे से कहा, ''देख बेटा! यह तेरा घर नहीं। तू ऊँचे घराने का बच्चा है। बड़े पिता का साहबजादा है। वहाँ मौत नहीं पैदाईश नहीं।'' धीरे-धीरे बच्चा पिता की बातों पर विश्वास करने लग जाता है। एक दिन उसके अंदर भी अपने वतन की याद जाग जाती है। पिता उसे अपने साथ लेकर आ जाता है और अपने महल का बादशाह बना देता है। इसी तरह परमात्मा हमारी खोज़ में निकलता है।

जब क्राईस्ट जंगलों में घूम रहे थे तो किसी ने आपसे पूछा कि आप मारे-मारे क्यों घूम रहे हैं, आपका क्या गुम हो गया है? क्राईस्ट ने कहा, ''मैं अपनी भेड़े ढूंढ़ रहा हूँ।'' यहाँ आत्मा को भेड़ कहकर ब्यान किया गया है। पलटू साहब कहते हैंः

*उन्हें क्या है चाह फिरत है मुल्क बथेरा।*
*जीव तारन कारणे सेहंदे दुख बथेरा।*

सन्त किसी जगह धन-दौलत इकट्ठी करने के लिए नहीं जाते और न ही मान-बड़ाई के लिए जाते हैं। वे अपनी आत्मा की खोज़ में अपने कमजोर शरीर को लेकर जगह-जगह जाते हैं। गुरु नानक साहब की हिस्ट्री पढ़कर देखें! आप पैदल चलकर लंका, बगदाद, मक्का तक गए। आज तो साधन है इसलिए आज के महात्मा इससे भी दूर की यात्राएं करते हैं। परमात्मा हमारी खोज़ में हमारी तरह इंसान बनकर आता है। हम उनकी बात सुनना तो दूर, उन्हें कष्ट देने शुरु कर देते हैं।

हम आज महात्मा गुरु अर्जुनदेव जी की बानी पढ़ रहे हैं। उनके अंदर बहुत नम्रता थी। उन्होंने हमारे ऊपर रहम किया लेकिन लोगों ने उनके साथ क्या किया? उन्हें गर्म तवे पर बिठाया गया। उनके सिर पर गर्म रेत डाला गया। कबीर साहब कहते हैं:

*क्या अपराध सन्त है कीन्हा बाँध पोट कुंच्चर को दीन्हा।*
*कुंच्चर पोट ले ले नमस्कारे बूझे नहीं काजी अंधियारे।*

किसी सन्त ने कभी किसी को श्राप नहीं दिया लेकिन वर जरूर दिया है कि हे परमात्मा! तू इन्हें बख्श दे। ये नहीं जानते कि ये कितना बुरा कर्म कर रहें हैं? जब परमात्मा हमारे जैसा बनकर आता है तो वह हमें समझाता है कि 'नाम' दो प्रकार का है। एक नाम *वर्णात्मक* है और दूसरा नाम *धुनात्मक* है। *वर्णात्मक* नाम बोला जाता है, पढ़ा जाता है, यह चार प्रकार का है-परा, बसन्ती, मदमा और बेकरी। *धुनात्मक* नाम लिखने, पढ़ने बोलने में नहीं आता। सारे वेद-शास्त्र इसकी महिमा गाते हैं। इसी के आधार पर खण्ड-ब्रह्माण्ड चल रहे हैं।

महात्मा आपको अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। आप सिमरन को साधारण लफ्ज़ न समझें अगर हम बम को हाथ से मारेंगे तो वह चोट नहीं पहुँचाता लेकिन जब हम उसी बम को तोप में डालकर छोड़ते हैं तो वह बहुत नुकसान करता है।

इसी तरह बानी वही होती है लेकिन जब वह बानी किसी कमाई वाले महात्मा की जुबान पर आती है तो वह असर करती है:

*सो स्वरूप सन्तन कथे विरले योगीश्वर।*
*कर कृपा जाको मिले धन धन ते इश्वर।*

परमात्मा अविनाशी है उसका स्वरूप, रंग न्यारा है हम परमात्मा का ध्यान किस तरह लगा सकते हैं? धन्य है वह परमात्मा जो हमें ऐसे मालिक के प्यारों के पास लेकर जाता है। जब परमात्मा इस संसार में सतगुरु बनकर आता है तो ही हम उसका ध्यान कर सकते हैं। पहले-पहले हमें वह इंसान लगता है लेकिन जब हम सिमरन करके आँखों के पीछे आते हैं, स्थूल पर्दा उतार देते हैं तो वही सतगुरु सूक्ष्म रुप धारण कर लेता है। जब हम ब्रह्म में जाते हैं तो वह ब्रह्म रुप में है। जब हम तीनों पर्दे उतारकर कारण में जाते हैं तो वहाँ वह 'शब्द-रूप' है। जैसे-जैसे हम ऊपर जाते हैं वह स्वरूप बदलता जाता है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं:

*अकाल मूरत है साध सन्तन की ठहरनी की ध्यान को।*

सन्त काल के दायरे के पार से आते हैं। जब हम सिमरन करते हैं तो हमारा ख्याल बार-बार नीचे गिरता है, हमें ध्यान को ऊपर रोकना है और सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करने हैं। महाराज सावन सिंह जी ध्यान पर बहुत जोर देते थे।

महाराज सावन कहा करते थे, ''सतसंग ध्यान को पक्का करने का मौका है। महात्मा जब सतसंग करते हैं उस समय आप इधर-उधर की बातें न करें। किसी की तरफ न देखें। सतसंग के बाद किसी से बातें करेंगे तो वह स्वरूप आपकी आँखों के आगे से ओझल हो जाएगा अगर सतसंग सुनकर अभ्यास पर बैठे तो इससे आपका बहुत फायदा होगा।''

ध्यान करने का मतलब यह नहीं कि हम उनकी पिक्चर का ध्यान लगाए। मूर्ति बेजान होती है अगर मूर्ति घर में रखनी है तो उसे अपना मित्र या बुर्जुग समझकर रखें लेकिन ध्यान स्वरूप का ही करें।

यह शरीर एक महल है इसके नौं द्वार हैं। ये नौं द्वार बाहर दुनिया की तरफ खुलते हैं, दसवाँ द्वार अंदर परमात्मा की तरफ खुलता है। महात्मा हमें नौं द्वारे खाली करने के लिए मंत्र देते हैं आप उस मंत्र को जपें ताकि आपका ध्यान दोनों आँखों के बीच एकाग्र हो जाए।

*नौं दरवाजे काया कोट गढ़ दसवाँ गुप्त रखीजे।*
*बज्र किवाड़ न खुल्ली गुरु शब्द खुलीजे।*

परमात्मा हमें आँखों के जरिए बाहर निकालकर खुद बज्र किवाड़ लगाकर अंदर बैठ गया है। कोई महात्मा मिले! वही आपका बज्र किवाड़ खोल सकता है।

*गुरु कुँजी पाहू निवल मन कोठा तन छत।*
*नानक गुरु बिन मन का ताक न उघड़े अवर न कुँजी हथ।*

आप प्यार से कहते हैं कि परमात्मा महात्मा को चाबी देकर भेजता है। 'नाम' चाबी है। आप महात्मा के स्वरूप का ध्यान करें। महात्मा जो मंत्र देते हैं उसे श्रद्धा और प्यार से जपें।

**गुरु कै चरन हृदय लै धारउ, गुरु पारब्रह्म सदा नमस्कारउ।।**

गुरु साहब कहते हैं, ''हम बाहर के चरणों को भी नमस्कार करते हैं। अ,ल,फ,बे सन्तों की देह से ही शुरु होती है अगर हमें बाहर चरण न मिलते तो हम अंदर प्राप्त नहीं कर सकते। जब हम सिमरन के जरिए ख्याल को इकट्ठा करके आँखों के पीछे एकाग्र करते हैं आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो यह स्वरूप दसवें द्वार से ऊपर जाकर हमारे अंदर प्रकट हो जाता है।''

तुलसी साहब कहते हैं अगर अंदर गुरु का एक नाखून भी आ जाए तो यह शरीर प्रकाश से भर जाता है। जैसे-जैसे सेवक अंदर जाता है तरक्की करता है वैसे-वैसे गुरु अपना स्वरूप धारण करता है। वह इंसान तो हमें बाहर से दिखता है अंदर जाते हैं तो पता लगता है कि वह परमात्मा से अलग नहीं।

बुल्लेशाह से उसकी बहनों, भाभियों और समाज वालों ने कहा कि तू सैयद है, तेरी ऊँची जाति है। मुसलमानों में सैयद जाति की बहुत इज्जत है। सारी दुनिया मक्का की तरफ जाती है लेकिन तू अराईयों की तरफ जाता है इसमें क्या भेद है?

बुल्लेशाह के गुरु ईनायतशाह अराई थे। वह खेती का काम करते थे। बुल्लेशाह ने कहा कि जो उन्हें अंदर से देखता है वह बहिशतों में भी नहीं थूकेगा। जिसने मालिक के घर जाना है वह मुझे सैयद नहीं अराई कहे। गुरु रामदास जी गुरु अर्जुनदेव जी के पिता लगते थे लेकिन जब गुरु अर्जुनदेव जी अंदर गए तो उन्होंने यही कहाः

*मैं देख-देख न रज्ज़ा गुरु सतगुरु देहा।*

तू धन्य है। किस तरह समुद्र एक घड़े में बंद होकर बैठा है। मैं बाहर देखता हूँ तो वह इंसान है, अंदर देखता हूँ तो वह परमात्मा से अलग नहीं।

**मत को भरमि भुलै संसारि।। गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि।।**

गुरु अर्जुनदेव जी हमें बड़े प्यार और दृढ़ विश्वास के साथ समझा रहे हैं कि चाहे कोई हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई है वह इस भ्रम में न रहे कि किसी गुरु-पीर की जरूरत नहीं। यह हमारे मन का बहाना है क्योंकि काल ने हमें चक्कर में डाला हुआ है। काल ने तन की रचना करके साथ में मन लगा दिया और मन की ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा 'नाम' भक्ति न करे। नाम-भक्ति करने से मन को कैद होना पड़ता है इसलिए हम कह देते हैं कि गुरु-पीर की कोई जरूरत नहीं।

हर ग्रन्थ यही ब्यान करता है कि गुरु के बिना, 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं। परमात्मा ने 'नाम' का बेड़ा बनाकर सन्तों के हवाले कर दिया है। सन्त इस बेड़े को लेकर संसार में आते हैं। इस बेड़े को किसी ईंधन पेट्रोल या डीजल की जरूरत नहीं। सन्त इस बेड़े के मल्लाह हैं। जो लोग पक्के भरोसे से इस बेड़े में सवार हो जाते हैं सन्त उन्हें भवसागर

की लहरों से बचाकर पार ले जाते हैं लेकिन जो डावाडोल मन से इस बेड़े को पकड़ते हैं वे यहीं रह जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*कथा कीर्तन कर बिखे भवसागर की नाव।*
*कहे कबीर जग तरन को नही और उपाव।*

**भूले कउ गुरि मारगि पाइआ।। अवर तिआगि हरि भगती लाइआ।।**

पता नहीं हम कितने जन्मों से परमात्मा को भूले हुए हैं। इस दुखों की नगरी में इतने दुख क्यों सह रहे हैं? बेशक देखने में यहाँ हर कोई सुखी नजर आता है अगर अकेले में उससे पूछकर देखें तो पता चलता है कि वह कितने दुखों से घिरा हुआ है। इस दुखी दुनिया में किसी को कर्ज लेने का दुख है तो किसी को कर्ज देने का दुख है। जिसकी कोई औलाद नहीं वह दिन-रात तड़फ रहा है; जिसकी औलाद है वह औलाद से दुखी है। जिसकी शादी नहीं हो रही वह रो रहा है; जिसकी शादी हुई है वह औरत से दुखी है। कोई पत्नी रो रही है; उसका पति मर गया है। कोई बीमारी से दुखी है, कोई बेरोजगारी से दुखी है। इस दुखी दुनिया में कौन सुखी है? तुलसी साहब कहते हैं:

*कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास।*
*एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।*

जिसकी 'नाम' से लिव लग जाती है वह मालिक की मौज मान लेता है इसलिए इस दुखी दुनिया में थोड़ा बहुत सुखी नजर आता है। मालिक के प्यारे हमारे सच्चे हितैषी **सच्चे साथी** है। वे इस दुखी दुनिया में आकर हम भूले-भटके, विषय-विकारों और शराबों-कबाबों में फँसे हुओं से कहते हैं, ''बेटा! तेरा यह रास्ता है अगर तू इस रास्ते पर चलेगा तो तुझे शान्ति मिलेगी। तू अपने घर सच्चखंड जहाँ से तेरी आत्मा आयी है वहाँ पहुँच जाएगा।''

*भूले सिक्ख गुरु समझाए ओजड़ जांदे मार्ग पाए।*

**जनम मरण की त्रास मिटाई।। गुर पूरे की बेअंत वडाई।**

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं गुरु की महिमा नहीं गा सकता। गुरु ने मुझे परमात्मा की भक्ति में लगाकर मेरे जन्म-मरण का कष्ट खत्म कर दिया है।'' हिन्दू शास्त्रों में आता है कि मौत के समय हजार बिच्छुओं के डंक जितना कष्ट होता है। तुलसी साहब कहते हैंः

*तुलसी मृत्यु के वक्त पीड़ा होत अपार।*
*बिच्छू इक हजार का डंक लगे इक वार।*

हम किसी को देखकर कहते हैं कि उसने आराम से देह छोड़ी है। उससे पूछकर देखें कि वह कितना दुख महसूस कर रहा है? हजरत बाहु कहते हैंः

*इक विछोड़ा माँ प्यो भाइयाँ दूजा अजाब कब्र दा हूँ।*
*कब्रां दे विच अन्न न पानी ओथे खर्च लुड़ींदा घर दा हूँ।*

एक तरफ माता-पिता से बिछड़ने का दुख होता है। यहाँ हम रहने के लिए कितने महल बनाते हैं लेकिन आगे कब्र हमारा इंतजार कर रही होती है। मौत-पैदाईश आसान नहीं।

कुरान में आता है कि मौत के समय इतनी पीड़ा होती है जैसे काँटों वाली झाड़ी को गुदा में डालकर मुँह से निकाले। गुरु साहब कहते हैं कि मैं अपने पूर्ण गुरु की क्या तारीफ करूँ जिसने भक्ति करवाकर मेरा जन्म-मरण ही काट दिया।

**गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास।। अंधकार महि भइआ प्रगास।।**

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि गुरु की कृपा से मेरा उल्टा कमल सीधा हो गया है, खिल उठा है। मैं खुश हो गया हूँ। मेरे गुरु ने अपार दया करके मुझे परमात्मा की भक्ति में लगा दिया है। प्यारेयो! कोई अपना होगा तो ही वह तरस करेगा!

मैं बताया करता हूं कि परमात्मा कृपाल अपना बुजुर्ग शरीर लेकर अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए 500 किलोमीटर तक आते रहे। उस समय तो सड़के भी नहीं थी। आप सूक्ष्म रूप और शब्द -रुप में भी

आते रहे। कोई अपना होगा तो ही आएगा नहीं तो कौन आता है? हम गुरु की क्या महिमा कर सकते हैं?

**जिनि कीआ सो गुरु ते जानिआ।। गुरु किरपा ते मुगध मनु मानिआ।।**

अब गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिस परमात्मा ने सारे संसार की रचना पैदा की है इसका भेद हमने अपने गुरु रामदास से प्राप्त किया है। गुरु की कृपा से हमारा मूर्ख मन परमात्मा की भक्ति की तरफ लग गया है।''

**गुरु करता गुरु करणै जोगु।। गुरु परमेसरु है भी होगु।।**

गुरु कर्ता है। गुरु करणजोग है वह जो चाहे कर सकता है। वह हमारा **सच्चा साथी** है। ऐसे मालिक के प्यारे कभी भी कुदरत के कानून के खिलाफ नहीं जाते। वे सदा परमात्मा का भाणा मानते हैं, चमत्कार नहीं दिखाते। परमात्मा का कभी नाश नहीं होता। परमात्मा अब भी हैं और आगे भी रहेगा। गुरु भी परमात्मा में समाकर सदा ही है।

***सतगुरु मेरा सदा सदा न आवे न जाए।***
***वह अविनाशी पुरुष है हर जहया रहया समाए।***

**कहु नानक प्रभि इहै जनाई ।। बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ।।**

गुरु अर्जुनदेव जी प्यार से बता रहे हैं जब हम गुरु रामदास जी की दया से समाधि अवस्था में अंदर गए परमात्मा को प्रकट किया तो हमें यही जानकारी मिली कि गुरु के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

***मात पिता बिन बाल न होई बिन्द बिना कैसे कपड़े धोई।।***

जैसे साबुन के बिना कपड़ा साफ नहीं होता; माता-पिता के संजोग के बिना बच्चा पैदा नहीं होता। परमात्मा से मिलना है तो महात्मा के पास जाकर उनसे रास्ता प्राप्त करना पड़ेगा। महात्मा के दिए हुए 'शब्द' को श्रद्धा, प्यार और भरोसे से जपें। आखिर में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपनी बानी में यहाँ तक कहते हैं :

*गुरु मंत्र हीनस जो प्राणी धृगंत जन्म भ्रष्टने।*
*कूकर सूकर गर्धव खल काके तुलहे।*

आप कहते हैं कि 'नाम' के बिना यह जीव कुत्ते, सुअर, गधे, साँप और कौए की तरह है। कबीर साहब कहते हैं:

*राम कृष्ण से को बड़ो तिन्हू की गुरु कीन्ह।*
*तीन लोक के नेह का गुरु अग्गे आधीन।*

राम, कृष्ण तो त्रिलोकी के मालिक थे फिर भी उन्होंने संसार में आकर मर्यादा पूरी की।

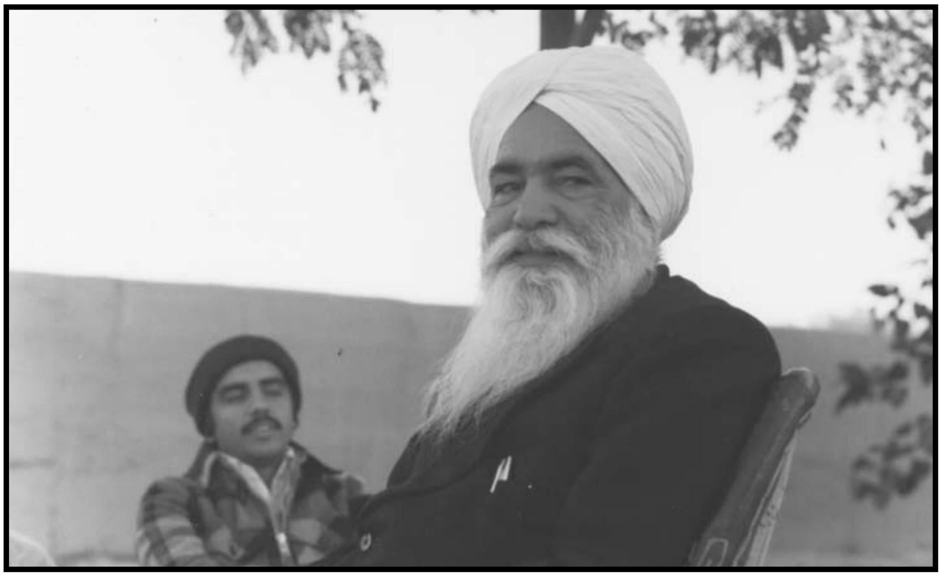

प्यारे बच्चों! अपने ऊपर रहम करो, अपने बच्चों पर रहम करो अगर आज आप शराब पीते हैं तो कल आपके बच्चे भी शराब पिएंगे अगर आज आप घर में बकरे काट रहे हैं तो आपके बच्चे भी इसी आदत में फँस जाएंगे। हमने अपने आपको सुधारना है। आपने जो कुछ सुना है इस पर अमल करें। बानी को सोच-समझकर पढ़े:

*पढ़या इल्म अमल न कीता पढ़या फेर पढ़ाया की।*
*आदत खोटी न गँवाई मत्था फेर घिसाया की।*

✷✷✷

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा बातचीत

# पति-पत्नी

सन्तबानी आश्रम, न्यू हैम्पशायर

जब से यह संसार बना परमात्मा ने ऋषियों मुनियों और महात्माओं को इस दुनिया की मर्यादा कायम रखने के लिए भेजा। उन्होंने भ्रष्टाचार को रोकने और लोगों को सुख से जीवन व्यतीत करने का तरीका बताया।

ऋषियों मुनियों ने बताया कि जिसके पेट से हमने जन्म लिया वह हमारी माता है। कौन हमारा पिता और कौन हमारे भाई-बहन हैं। **पति-पत्नी** जीवन के साथी हैं, जिन्हें अपना बनाने के लिए हम दुनिया के सामने कसमें खाते हैं। इस रिश्ते को निभाने के लिए अगर हम उस नियम को नहीं निभाते तो हम परमात्मा और दुनिया की नजरों में अच्छे नहीं समझे जाते।

जो माता-पिता अच्छे विचारों से अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं उन बच्चों की सोच भी अच्छी होती है। अच्छे बच्चे ही ऐसे घर में जन्म लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो माता-पिता अपने बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं वह पहले खुद अच्छे बनें क्योंकि बच्चों पर माता-पिता का ही प्रभाव पड़ता है।''

महात्माओं ने हमें **पति-पत्नी** के रिश्ते के बारे में समझाया कि यह बहुत ही नाजुक और पेचीदा रिश्ता है जिसे हमनें पूरी जिंदगी निभाना है। एक समय था जब पति मर जाता तो पत्नी किसी और आदमी की तरफ नहीं देखती थी, पति के साथ ही सति हो जाती थी। अब वह समय नहीं रहा हम सब सीमाएं पार कर चुके हैं।

आप देखें! हम किस तरह बेलगाम होकर इधर-उधर भटक रहे हैं। **पति-पत्नी** की परवाह नहीं करता। बच्चे अपने माता-पिता की परवाह

नहीं करते। अब हमने शादी तोड़ने का एक नया रिवाज-तलाक बना लिया है। सोचकर देखें! इसका बच्चों पर क्या असर पड़ता है? जब **पति-पत्नी** अलग हो जाते हैं तब बच्चे किस तरह दुखी होकर माता या पिता किसी एक के पास रहते हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी तलाक को अच्छा नहीं समझते थे। हुजूर कहा करते थे, ''अगर एक इंसान दूसरे इंसान के प्रति प्रेम कायम नहीं रख सकता तो वह परमात्मा के साथ कैसे प्रेम कर सकता है?''

भारत में परंपरा है कि माता-पिता ही अपने बच्चों की शादी तय करते हैं। यहाँ के लोग इस नियम को दृढ़ता से मानते हैं और इस तरह की शादी में तलाक का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। आपको राजस्थान में **पति-पत्नी** के तलाक के मामले नहीं मिलेंगे।

औरत की जिसके साथ शादी हो जाती है वह सिर्फ उसी आदमी को अपना पति और बाकी आदमियों को अपना भाई समझती है। इसी तरह आदमी भी इन बातों को मानता है कि जिसके साथ उसकी शादी हुई हैं वही उसकी पत्नी है बाकी सब औरतें उसकी माँ या बहने हैं। बाहरी जिंदगी का अनुशासन हमारे अभ्यास के लिए भी अच्छा है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि अपनी आँखों से किसी पराई औरत को देखना बहुत बड़ा पाप है। **पति-पत्नी** का रिश्ता बहुत गहरा होता है। इस रिश्ते के जरिए ही हम अपनी दुनियावी जिंदगी को आसानी से चला सकते हैं लेकिन जब हम अपने मन को काबू में नहीं रख पाते तो पति शादी के रिश्ते को तोड़ देता है या पत्नी इस दिशा में कोई कदम उठाती है। तब हम कहते हैं कि हमें अंदर कुछ दिखाई नहीं देता।

ऐसे लोगों पर दया आती है जिनकी बाहरी जिंदगी साफ-सुथरी नहीं वे चाहे कई घंटे आँखें बंद करके बैठे रहें उन्हें अंदर क्या दिखाई देगा? अगर एक आदमी के साथ प्यार के रिश्ते को निभाना मुश्किल है तो एक ही समय में बहुत सारे लोगों के साथ प्यार कैसे निभा लेंगे?

यह सतसंग केवल **पति-पत्नी** के लिए नहीं सबके लिए है। कबीर साहब कहते हैं, ''जो किसी की पत्नी कहलाती है लेकिन किसी दूसरे आदमी के साथ सोती है वह किस तरह अपने पति को ख़ुश कर सकती है? जबकि हर समय उसके मन में उसका प्रेमी समाया रहता है।''

सन्तमत में भी यही बात लागू होती है अगर हम भजन-सिमरन में बैठे हुए दुनियावी चीजों को अपने मन में बसा रहे हैं तो हम अपने साथ धोखा कर रहे हैं। लोग शादी करके एक-दूसरे से प्यार करने की कसमें खाते हैं, एक ही बिस्तर पर सोते हैं एक-दूसरे को अपना शरीर दे देते हैं लेकिन मन नहीं देते इसलिए वे दुखी रहते हैं।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग दे रहे थे तब मस्ताना जी ने उनसे पूछा, ''अगर शिष्य को 'शब्द' में रस आ जाए तो उसे अपने गुरु को क्या अर्पित करना चाहिए?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''शिष्य को गुरु पर अपना मन अर्पित कर देना चाहिए। मन अर्पित करना आसान नहीं। **पत्नी-पति** को शरीर तो दे देती है लेकिन मन नहीं देती। हम अपने मन के सामने मुर्दे के समान हैं। हमारा मन जो चाहता है हमसे करवा लेता है। हम मन का कहना मानकर ही शराब पीते, मीट खाते और झूठ बोलते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं कि जब हमें 'नामदान' मिल जाता है तो हम अपने गुरु से कहते हैं कि हम आपके हैं। हमने अपना मन आपको दे दिया है। हमारे अंदर बैठा हुआ गुरु हमें ख़ुश देखना चाहता है इसलिए कहता है, ''ठीक है! आप जो भी कहते हैं मैं उसे मान लेता हूँ।'' गुरु परमात्मा है वह सब जानता है कि हमारे मन में क्या है? जो अपने गुरु के आगे मुर्दे के समान है वही साधु है। मरा हुआ शरीर वही करता है जो उसका गुरु उसे करने के लिए कहता है।

अगर पत्नी सोलह श्रृंगार करके कई तरह के गहने पहनकर भी अपने पति को ख़ुश नहीं कर सकती तो उसके श्रृंगार का क्या फायदा? अगर हम दिन-रात साधु के पास रहते हैं सतसंग सुनते हैं लेकिन मन

को काबू में नहीं कर पाते तो हम शारीरिक रूप से सतसंग में जाते हैं लेकिन हमारा मन इधर-उधर भटकता रहता है। हम 'नाम' के रंग में कैसे रंग सकते हैं? हमारा मन स्थिर नहीं यह घोड़े की तरह बहुत तेज भागता है। आप इस मन को अंधेरी कोठरी के ताले में बंद कर दें तब भी आप देखेंगे कि आपका मन दूर किसी दुनिया में भटक रहा है।

आप जिस प्यार से अपने शरीर को सतसंग में लाते हैं उसी प्यार से अपने मन को भी सतसंग में लाए और अपने मन से कहें, ''यह सतसंग तुम्हारे लिए है।'' सतसंग में मन के बारे में ही बताया जाता है।

कबीर साहब कहते हैं अगर हमें रात को किसी नाचने वाली के साथ नाचना हो तो हमें नींद नहीं आएगी अगर साधु के सतसंग में जाते हैं तो हमारा शरीर तरह-तरह के बहाने बनाता है हमें नींद आती है।

एक महात्मा का कहना है, ''अगर नाचने गाने या खुशियां मनाने का माहौल हो तो मन दिलचस्पी लेता है लेकिन सतसंग में हमें नींद आने लगती है और हम उदास हो जाते हैं। व्याभिचारिणी औरत चौबीस घंटे सावधान रहती है अगर वह वफादार नहीं तो अपने पति को कैसे खुश कर सकती है? धोखा देने से बड़ा कोई पाप नहीं। कोई पत्नी चाहे कितना भी भजन-सिमरन कर ले अगर वह अपने पति को धोखा देती है तो परमात्मा उससे कभी खुश नहीं होगा।''

द्वापर युग में रावण हुआ है जोकि ज्ञानी पंडित था। उसने धोखे से रामचन्द्र की पत्नी सीता का हरण किया तो उसे श्राप मिला। हिन्दु लोग उसे अभी भी नहीं भूले। उत्तरी भारत के लोग आज भी साल में एक बार रावण का पुतला बनाकर जलाते हैं।

मैंने शुरू में ही बताया है कि परमात्मा ने ऋषियों-मुनियों को संसार की मर्यादा कायम रखने के लिए भेजा है अगर हम परमात्मा के बनाए नियमों को तोड़कर अपने मन की बात सुनते हैं तो परमात्मा हमें कभी माफ नहीं करेगा। कबीर साहब कहते हैंः

*कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय।*
*भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोय।*

कामी कभी संतुष्ट नहीं होता। हम जितना काम की इच्छा को बढ़ाते हैं यह उतना बढ़ जाता है। इससे हमारे शरीर को शक्ति प्रदान करने वाला तरल कम हो जाता है, हमारा शरीर खराब हो जाता है; हमारे माथे की जोत बुझ जाती है। जिस तरह आग में लकड़ियां डालने से आग और भड़कती है। जब आप परमात्मा के दरबार में पेश होंगे तो वहाँ क्या लेकर जाएंगे? कामदेव कहता है, ''जो लोग मेरा गलत उपयोग नहीं करते ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उनकी इज्जत करते हैं।''

कामी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता क्योंकि उसके मन में हमेशा शक और झूठ भरा रहता है। ऐसे झूठे लोग भक्ति के नाम को बदनाम करते हैं। इस तरह के लोग व्याभिचार करके अपनी जिंदगी बर्बाद कर लेते हैं। उनका एक पैर व्याभिचार की तरफ और दूसरा भक्ति की तरफ होता है। सोचकर देखें! दो नावों पर सवार होने वाला किस तरह नदी पार कर सकता है?

जिसने अपनी जिंदगी के तरल पदार्थ को नहीं खोया वह लगातार पाँच-छह घंटे बिना पीठ हिलाए भजन में बैठ सकता है। वह जैसे ही भजन पर बैठेगा उसकी आत्मा ऊपर चली जाएगी उसे समय का ख्याल ही नहीं रहेगा।

आखिर में कबीर साहब कहते हैं, ''इस दुनिया में आकर जो आदमी बहुत से दोस्त और संगी-साथी बनाता है वह खुश नहीं रह सकता अगर वह एक दोस्त बनाता है तो खुशी से सो सकता है और खुशी से अपनी जिंदगी बिता सकता है। उसी तरह अगर हम दुनिया में आकर एक से ज्यादा गुरु धारण करते हैं और बहुत से देवी-देवताओं की पूजा करते हैं तो हम इस जिंदगी का आनन्द नहीं ले सकते क्योंकि इससे हमें शान्ति नहीं मिलेगी।''

✷✷✷

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

# प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

## प्रेम क्या है?

**प्रेम** मालिक का रूप है। सृष्टि पैदा होने से पहले मालिक निरोल चेतनता का अथाह समुद्र और पूर्ण प्रेम का अनन्त स्वरूप था। वह सब कुछ आप ही आप था। वह अपने प्रेममयी आनन्द में मग्न था। उसकी असलियत ही **प्रेम** थी क्योंकि उसके सिवाय और कोई नहीं था। प्रेम उसकी जाति का निचोड़ था जिसे जाहिर करने के लिए वह किसी का मोहताज नहीं था। प्रेम की अवस्था को समझने के लिए आप इस उदाहरण से कुछ अंदाजा लगा सकेंगे।

आप किसी मालिक के **प्रेम** में भेद हुई शख्सियत में इतना लीन हो जाएं कि आप अपने आपको भूल जाएं आपको अपने तन-मन की भी सूझबूझ न रहे। उस मनोहर प्रीतम का ध्यान करते हुए आप रस भरी मस्ती में इतना गुम हो जाएं कि मैं तू का ख्याल अपने आप ही हट जाए और आप प्रेम में आनन्द रूप हो जाएं। उस हालत को आप लफ्जों में बयान नहीं कर सकते क्योंकि मालिक प्रेम है और प्रेम ही मालिक है; यह दोनों एक रूप हैं।

**प्रेम** का अनुमान दुनियावी सुख या आनन्द से नहीं कर सकते। प्रेम एक ऐसा जज्बा है जिसका वर्णन लिखने या बोलने में नहीं आ सकता अगर बयान भी करना हो तो हम इसे मैगनेट की कशिश कह सकते हैं। प्रेम दुनिया में आदि से है इसका असर सभी जमीनी और आसमानी चीजों में मौजूद हैं। प्रेम के कारण ही सब अलग-अलग अंश आपस में एक-दूसरे को आकर्षित कर रहे हैं और जहान कायम है। सब प्रेम का ही पसारा है मालिक प्रेम है। **प्रेम** के कारण ही सब कुछ

जहूर में आया। **प्रेम** के कारण ही हमें यहाँ भेजा गया फिर वापिस ले जाने वाला प्रेम ही है। प्रेम का मजहब ही असली मजहब है जो इस पर चलता है वह ठीक रास्ते पर चल रहा है।

शम्स तबरेज साहब इश्क की तारीफ करते हुए फरमाते हैं, ''कुफ्र और इस्लाम तो अब जाहिर हुए हैं। इश्क और मालिक तो अजल से भी पहले थे अगर कोई काफिर इश्क में मग्न हो जाए तो आप उसे काफिर न समझें।''

**प्रेम** आनन्द का सोमा और मगनताई है। प्रेम दिल देने का नाम है। दुनिया में जो कुछ दिख रहा है वह प्रेम से खाली नहीं। हम किसी चीज को तभी जान सकते हैं अगर हमारा उसके साथ अशां-अंशी भाव हो इसलिए मालिक के प्रेम के रंग में आनन्द ही आनन्द और एक रस एकाग्रता ही एकाग्रता है।

**प्रेम** का मतलब ही लीन हो जाना है। यह आलौकिक कशिश है जो किसी खास शय की तरफ होती है। प्रेम प्रे धातु से निकला है जिसके अर्थ हैं-दिल को भाने और सुहाने वाला प्यार। जिसमें कशिश हो! दिलदही प्यार का ही दूसरा नाम है। दिल देने को दिलदही कहते हैं। दिल किस तरह दिया जाता है? शौक से किसी की तरफ पूर्ण तवज्जो भरी निगाह करना सुख भावना ख्याली धारणा को घड़ी-घड़ी किसी की तरफ मोड़ना। उसके ऐब या नुख्स पर नजर न करना केवल उसी को ही अपनी भावभरी रूचि का हकदार समझना ही दिल का देना है।

आशिकी किसे कहते हैं? अपने प्रीतम का बंदा बन जाना और अपना दिल उसके हाथों में देकर हैरान फिरना है। प्रेम का स्वाभाविक गुण एकाग्रता भरी याद है इसलिए जहाँ **प्रेम** होगा वहाँ एकाग्रता होगी। एकाग्रता के बिना कोई ताकत काम नहीं करती। किसी के रूप या गुण को देखकर उस पर दिल का आ जाना, उसकी ख्वाहिश करना या उसका अनुराग होना प्रेम कहलाता है। रूह-रूपी कतरे को मालिक रूपी दरिया बना देने को प्रेम कहते हैं।

यह वह जज्बा है जिसमें अपने आपसे बेसुधी और बेखबरी हो जाती है। प्रेम की राह फनाह के मुकाम के अंदर है। प्रेमी को ऐसी सैकड़ो अविनाशी पदवियां प्राप्त होती हैं। यह गफलत नहीं एक किस्म की जागृति में जी उठना है और उस मालिक की सदा की चेतनता के साथ जुड़ना है।

इश्क एक अथाह समुद्र है जिसका कोई अन्त नहीं; यह बयान में नहीं आ सकता। प्रेमी की खबर किसी प्रेमी से पूछें! प्रेम कभी न फनाह होने वाला राग है। यह बहुत मीठा और रसभरा दर्द है, कभी न भूल सकने वाला अहसास है। प्रेम की लज्जत पूछनी हो तो किसी प्रेम पुजारी से पूछें! या किसी बुलबुल से पूछे! जो फूल की आशिक है या भँवरे से पूछें! जो अपनी जान रोशनी पर वार देता है हौंका तक नहीं भरता।

अगर आप **प्रेम** के बारे में कुछ जानना चाहते हैं तो प्रेम से ही जाकर पूछें? किसी और से पूछेंगे तो वह कोई उत्तर नहीं दे पाएगा। प्रेम खुश बयानी जानता है वह आपको अच्छी तरह समझा देगा कि वह क्या है? अगर इश्क की कोई झलक देखनी हो तो किसी प्रेमी की मस्त आँखों में देखें; आपको उसकी कुछ-कुछ समझ आएगी। वहाँ अक्ल, फिकर, तमीज सब प्रीतम की याद के सहारे एक होकर रहते हैं।

सन्तजन **प्रेम** का समुद्र होते हैं क्योंकि वे मालिक में अभेद होते हैं, मालिक निरोल प्रेम है। भक्तों में प्रीतम के प्यार के उछाले उभर-उभरकर दुनिया को निहाल करते हैं और उनके जमाल को पाकर प्रेमियों के अंदर मालिक से मिलने का चाव पैदा होता है।

***सुभर भरे प्रेम रस रंग उपजे चाव साध के संग।***

अगर प्रेम के अंदर कोई गरज छुपी हुई है या उसमें किसी तरह के लेन-देन का ख्याल है तो प्रेम प्रेम नहीं रहता; प्रेम प्रेम की खातिर होता है। प्रेम सदा प्रीतम से जुड़ा रहना जानता है। जब प्रीतम की तरफ से प्रीत की लहरें हमारे अंदर प्रवेश करती हैं तो हमारे अंदर प्रेम उभर आता है। प्रेम किसी तरह की प्रशंसा का मोहताज नहीं।

**प्रेम** बेजुबान है इसके होठ बंद हैं। प्रेम क्या चीज है इसके बारे में कोई क्या बताए? इसे हल करने की चाबी किसी सच्चे मालिक के भक्त को ही नसीब होती है। दूसरों को इसके बारे में ज्ञान ही नहीं। इश्क क्या है किसी कामिल से, किसी बेदिल से पूछना चाहिए? अपने भाव को त्यागना ही सच्चा प्रेम है।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं कि खुदी को त्याग करने का नाम **प्रेम** है। जब तक खुदी से छुटकारा नहीं मिलता प्रेम के रास्ते में कुछ नहीं बनता। अपने दिल को सब चिन्ता और विषयों से छुड़वाकर शीशे की तरह साफ और सादे बन जाएं। जब तक दिल में लालच के निगार बाकी रहेंगे प्रेम का चेहरा दिखाई नहीं देगा।

प्रेम से ही साहब दिल मर्द की जान को जिंदगी मिलती है अगर सच्चा प्रेम नहीं तो लालच है। प्रेम लगातार रहने वाली कशिश है। कहने को तो सभी **प्रेम** प्रेम कहते हैं लेकिन वे प्रेम को पहचानते नहीं। प्रेम कभी आ जाता है तो कभी चला जाता है। कभी रोने लगे तो कभी हँसने लगे इसका नाम प्रेम नहीं। **प्रेम** तो एक रस हालत रखता है। प्रेम में उतार-चढ़ाव नहीं। रूह आठों पहर प्रेम के रंग में रंगी रहती है। कबीर साहब फरमाते हैं:

***प्रेम प्रेम सबको कहे प्रेम न चीन्हे कोय।***
***आठ पहर भीना रहे प्रेम कहावे सोय।***
***आया प्रेम कहाँ गया देखा था सब कोय।***
***क्षण रोवे क्षण में हँसे ये तो प्रेम न होय।***

गुरु रामदास जी कहते हैं जिनके अंदर प्रीत हो गई वे आठों पहर प्रेम का रस लेते हैं। मालिक और सतगुरु की कृपा से सुखी रहते हैं।

***मैं मन तन प्रेम प्रेम का अट्ठे पहर लग्गन।***
***जन नानक कृपा धार प्रभ सतगुर सुख वस्सन।***

*........शेष अगले अंक में*

✷✷✷